Class-X

Hindi-A (002)

खण्ड - अ

1. i) (d) एशिया में
   ii) (b) दोनों ध्रुवों पर
   iii) (a) तापमान में वृद्धि के कारण
   iv) (d) नदियों का प्रवाह बना रहे
   v) (b) जीवाश्म ईंधनों का सीमित प्रयोग कर

2. II i) (d) श्रमजीवी वर्ग
   ii) (b) विपरीत परिस्थियों में भी तन कर खड़ा होने के कारण
   iii) (b) दूसरों के लिए अपना सर्वस्व लुटाने के कारण
   iv) (c) पूरी शक्ति से खुदाई करके
   v) (c) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

I i) (a) पथिक
   ii) (c) वह आशा का दीप लिए मुस्कुराता रहता है।
   (iii) (c) उसने कठिन बाधाओं के बंधन तोड़ना सीखा है।
   (iv) (b) विपरीत परिस्थियों से
   v) ~~(a)~~ (b) I, II, III

3. i) (a) कविता यह भी रेखांकित करती है कि प्रकृति और मनुष्य के सहयोग से ही सृजन संभव है।

ii) (c) 1936 में वे श्रीलंका गए और वहीं बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए।

iii) (a) नागार्जुन ने कविता के साथ-साथ अन्य गद्य विधाओं में भी लेखन किया

iv) (b) द्वितीय समानाधिकरण उपवाक्य

v) (c) संज्ञा आश्रित उपवाक्य

4. i) (b) कर्तृवाच्य

ii) (d) कर्मवाच्य

iii) (c) भाववाच्य

iv) (d) उनसे और नहीं सहा जाता।

iv) (d) शीला अग्रवाल की जोशीली बातों द्वारा रगों बहता खून लावे में बदल दिया गया

5. i) (c) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, बहुवचन (आदरार्थ), पुल्लिंग, कर्ता कारक

ii) (b) अनि. संख्यावाचक विशेषण, फूल विशेष्य, पुल्लिंग, बहुवचन

iii) (b) रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'रोपते' क्रिया का विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन

v) (d) सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, बहुवचन, वर्तमान काल, कर्तृवाच्य

iv) (a) निपात, 'हमेशा' पर बल दे रहा है

6 i) (d) श्लेष
ii) (b) उत्प्रेक्षा
iv) ~~iii)~~ (d) मानवीकरण
v) (b) अतिश्योक्ति
iii) (d) मदन महिप जू को बालक वसंत ताहि
प्रातहि जगानत गुलाब चटकारी दै

7 i) (b) I, III
ii) (b) कल्पना से परे 'कैप्टन' नाम के विपरीत उसका हुलिया देखकर
iii) (c) कथन (A) सही है और उसका कारण (R) भी सही है।
iv) (d) व्यंग्यात्मकता
v) (d) हालदार साहब को गंतव्य पर पहुँचाने की जल्दी

8. i) (b) असंस्कृति
ii) (d) कचौड़ी तलते समय छन्न की आवाज में आरोह - अवरोह दिखता था।

9. i) (a) प्रकृति और मानव के श्रम का प्रतिफल
ii) (d) मिट्टी, पानी, सूर्य, हवा और श्रम
iii) (c) मिट्टी की विशेषताएँ जो फसल उगाती हैं

iv) (b) किसान का परिश्रम खेती को शस्य श्यामला बनाता है।
v) (d) सूरज की ऊर्जा अन्न में परिवर्तित होकर हमें पोषित करती है।

10. i) (d) भोली गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में डूबी हैं जैसे चींटी का गुड़ से प्रेम है।
ii) (c) राम ने कहा कि ~~शिब~~ शिव धनुष तोड़ने वाला आपका कोई सेवक होगा।

खण्ड ब

11. (क) 'बालगोबिन भगत' पाठ में अनेक सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार किया है। बालगोबिन भगत गृहस्थ होते हुए भी साधू की तरह जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने पुत्र की मृत्यु पर शोक नहीं मनाया बल्कि उसे उत्सव का दिन कहा क्योंकि विरहनि आत्मा परमात्मा से जा मिली। उन्होंने प्रचलित सामाजिक रूढ़ियों के विपरीत पुत्रवधू से चिता को मुखाग्नि दिलवाई और भाई को बुलाकर पुत्रवधू की दूसरी शादी करवाने को कहा।

ग) वर्तमान समय में अपना जीवन अपने ढंग से जीने के दबाव ने लोगों को 'पड़ोस-कल्चर' से वंचित कर संकुचित, असुरक्षित और असहाय बना दिया है। लोग एकाकी में जीवन जीवन पसंद करते हैं और परिवार एकल हो गए हैं। आसपास लोगों से बात करने और घुल-मिलकर

रहने से सामाजिकता आती है। और परंतु इसका अभाव आज की पीढ़ी में नज़र आता है।

(घ) सर्वोच्च सम्मान पाकर भी बिस्मिल्ला खाँ द्वारा सजदे में सुर माँगना उनकी विनम्रता को और हमेशा बेहतर करने की कामना को दर्शाता है। इतने सम्मान पाने के बाद भी उन्होंने कभी भी खुद को संपूर्ण नहीं माना। यह उनकी विनम्रता दिखाता है। वे अपनी शहनाई के सुरों के माध्यम से श्रोताओं में भावना जागृत करना चाहते थे। इसी कारण वे सुर की खोज में अस्सी वर्ष तक रियाज़ करते थे।

12. (क) कवि विडंबना में हैं क्योंकि वे अपने जीवन को और आत्मकथा को सरल मानते हैं। वे आत्मकथा लिखकर अपनी दुर्बलताओं को उजागर नहीं करना चाहते जिससे उनके सरल जीवन कथा पर लोग हँसे। वे अपनी भोली आत्मकथा का मज़ाक नहीं उड़वाना चाहते।

(ख) कवि का मानना है कि बादलों में वज्र की शक्ति होती है। वे बादलों को गरजने को कहता है ताकि लोगो में क्रांति की चेतना हो। बादलों द्वारा लोगों में नई कविता की ही तरह नए उत्साह और उमंग का संचार होता है। बादलों के आने से लोग उत्साहित होते हैं और

आशा से भर जाते हैं जिससे क्रांति का आगाज होता है।

(ग) 'अट नहीं रही है' कविता में फाल्गुन मास में वसंत ऋतु का वर्णन हुआ है। वसंत ऋतु में चारों तरफ हरियाली होती है। नए पत्ते, फूल और सुगंधित हवा हर किसी को अपनी तरफ आकर्षित करती है। कवि के अनुसार फाल्गुन मास की सुंदरता इतनी अधिक बढ़ गई है कि यह कहीं समा नहीं रही। अगर कवि इस सुंदरता से नज़र हटाना भी चाहे तो भी वह नज़र नहीं हटा पा रहा।

13. (क) माता का अँचल शांति और सुख प्रदान करता है। जो शीतलता और स्नेह माँ के आँचल में हमें प्राप्त होता है, वह कहीं नहीं मिल सकता। बच्चा माँ के पास सुरक्षित और सुकून महसूस करता है। पाठ में भोलानाथ का पिता से अधिक लगाव था परंतु वह साँप को देखकर डरा तब घर पहुँचते ही उसने माँ की शरण ली। माँ के पास वह शांति और सुकून पाता है। माता भी भोलानाथ को रोता देख खुद रोने लगती है और उसे अपने आँचल में छिपा लेती है। माँ का शीतल और निश्छल स्नेह भोलानाथ को सुकून और शांति देता है।

(ग) "मैं क्यों लिखता हूँ" पाठ में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हिरोशिमा पर रेडियोधर्मी बम गिरने की घटना वर्णित है। हिरोशिमा में अमेरिका द्वारा एटम बम डाला गया था। लेखक ने अस्पताल में विस्फोट के बाद रेडियोधर्मिता से पीड़ित मरीजों को देखा। बाद में उन्होंने देखा कि सड़क पर एक बड़ा पत्थर है जिसपर मानव की आकृति बनी हुई थी। लेखक ने अनुमान लगाया कि विस्फोट के समय पत्थर के सामने एक व्यक्ति खड़ा होगा जो कि रेडियोधर्मी किरणों और गर्मी से भाप बन गया होगा। इसके अलावा बाकि पत्थर झुलस गया होगा। विश्व को ऐसी घटनाओं से बचाने के लिए सभी देशों को मेल-जोल से शांति प्रिय तरीके से रहना चाहिए। मानवता के संरक्षण के लिए ऐसे आविष्कार नहीं होने चाहिए और सभी को भाईचारे से रहना चाहिए।

P.T.O.

14. (क)

इंटरनेट : सूचनाओं की खान

आज विज्ञान बहुत प्रगति कर चुका है। मनुष्य ने कभी यह नहीं सोचा होगा कि देश-दुनिया की सारी जानकारी उसे सहज ही घर बैठे-बैठे प्राप्त हो जाएगी। पल-पल की खबर, प्रिय जनों से बातें, नई जानकारियाँ आदि हमें तकनीक के माध्यम से ही प्राप्त हो पाती हैं। तकनीक का ही अद्भुत वरदान है इंटरनेट। इंटरनेट के माध्यम से ही हम इतनी जानकारियाँ पाते हैं। केवल थोड़े से प्रयास से हम कोई भी सूचना प्राप्त कर पाते हैं। चाहे वह पढ़ाई के लिए सामग्री ढूँढना हो, चाहे नई-नई खबरें सुनना, इंटरनेट ही हमारी सहायता करता है। तीन दशक पहले इंटरनेट के बारे में कुछ लोग ही जानते थे परंतु वर्तमान समय में हर कोई इसके बारे में जानता है। मोबाईल, कंप्यूटर आदि आने से इंटरनेट की क्रांति आई जिससे अब यह लगभग हर व्यक्ति की पहुँच में है। देश-विदेश में इंटरनेट के सर्वव्यापी हो जाने से सूचनाएँ सहज ही भेजी जा सकती हैं। यह विद्यार्थियों, अध्यापकों, ~~साइनटि~~ साइंटिस्ट, बच्चों, बूढों सभी के लिए सूचना स्रोत है। इसके नकारात्मक पहलु भी हैं। धोखाधड़ी, गलत खबरें, अश्लील तस्वीरें, सांप्रदायिकता, गलत भावनाएँ आदि इसके नकारात्मक प्रभाव हैं। अतः हमें इस वरदान के प्रयोग में सजगता लानी होगी ताकि यह हमारे लिए अभिशाप साबित न हो।

15. (क)

परीक्षा भवन
क. ख. ग.

प्रिय भाई,
सादर प्रणाम

मैं यहाँ कुशल हूँ और आशा करती हूँ कि आप भी ठीक होंगे। तुम्हें तो पता ही है कि अभी मेरी बोर्ड की ~~परि~~ परीक्षाएँ समाप्त हुई हैं, तो अभी कुछ दिन पहले मैं नानी के घर गई थी। वहाँ पर राम और मंजू भी आए हुए ~~है~~ थे। हमने वहाँ खूब मज़े किए। मेरे अभी भी पाँच दिन के अवकाश बच रहे हैं इसलिए इनमें हमने गुजरात परिवार सहित घूमने का कार्यक्रम बनाया है। आप तो पहले भी चाचा जी के साथ वहाँ तीन साल रह चुके हैं इसलिए मैंने यह पत्र हमारी यात्रा को सुगम बनाने हेतु आपसे सुझाव हेतु लिखा है। मैं सरदार पटेल की प्रतिमा देखना चाहती हूँ। उसके अलावा सोमनाथ मंदिर, समुद्र तट आदि घूमने का भी मेरा मन है। कार्यक्रम की सारी जानकारी मैंने पत्र के साथ आपको भेजी है। उसमें क्या सुधार हो सकते हैं यह मुझे अवश्य बताना।
चाचा जी और चाची जी को प्रणाम और मंजू को प्यार।

आपकी बहन
पावनी

16. (ख) # ई-मेल

X [प्रेषक : publisherncertgov@gmail.com
प्राप्त कर्ता :

प्रेषक : priyanka07@gmail.com
प्राप्त कर्ता : publisherncertgov@gmail.com
विषय : पुस्ताकालय के लिए पुस्तकें मँगवाने हेतु
मान्यवर,
मैंने यह ईमेल अ.ब.स. विद्यालय के पुस्तकालय के लिए कक्षा 8-10 तक सभी विषयों की पुस्तकें मँगवाने हेतु लिखा है। हमारे विद्यालय में नया पुस्तकालय खुला है जिसके लिए हमें आपके प्रकाशन की सभी विषयों की 10 पुस्तकें चाहिए। पुस्तकों के नाम मैंने संलग्न कर दिए हैं। पुस्तकों के दाम और कुल मूल्य आप पुस्तकों के साथ भेज ~~दी~~ दीजिएगा। उसका भुगतान तीन दिन में कर दिया जाएगा। अत: आपसे अनुरोध है कि निम्न पुस्तकें भिजवा दें।
धन्यवाद

प्रेषक
प्रियंका
संलग्न - एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकें 8-10 विज्ञान, हिंदी, अंग्रेजी, गणित

17. (क)

रोहन मिष्ठान भण्डार

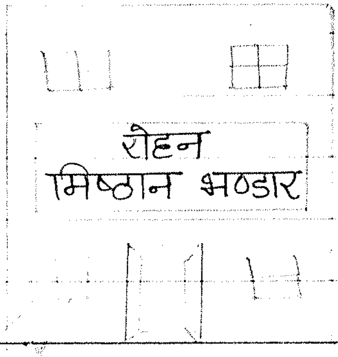

- देसी घी के लड्डू
- जलेबी
- रबड़ी
- बर्फ़ी
- काजू - कतली
- घेवर

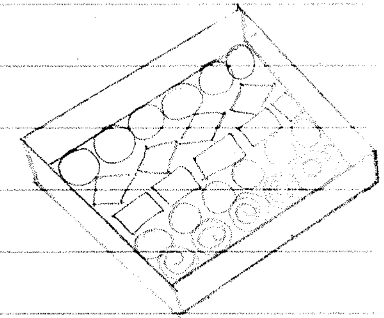

हमारे यहाँ सभी मिठाइयाँ व पकवान शुद्ध देशी घी में बनाए जाते हैं।

* शर्तें लागू

आज ही ले जाइए मिठाइयाँ , 20% छूट*

पता :- नई पँजाबी मार्केट , दुकान नं. - 950 , नई दिल्ली

फोन नं. - 9999999999

ईमेल - rohan24@gmail.com